जिनाज्ञाप्रदीप.

सिद्धमूर्ति विवेकविलास.

भाग दूसरा.

कर्ता

युक्तिवारिधिः उपाध्याय श्रीरामऋद्धि सारगणिः

२२ टोलोंके ७४ प्रश्नोंका जवाब.

प्रकाशक

वैद्य पंडित जीवण मल्लमुनिः हुक विद्याशाला
के मालक उपाध्यायजी के शिष्य प्रेमचंद अमरचंद
बीकानेर.

मुंबई-"निर्णयसागर" प्रेसमें बाळकृष्ण रामचंद्र
घाणेकरद्वारा मुद्रित

विक्रम संवत् १९६६ आवृत्ती १०००.

जाहिर खबर.



तपागच्छी मुनिः वल्लभ विजयजी सवेगीने पालणपुर सं० १९६६ के चोमासमें ढूढियोंकों संप वावत कप दिखाणे चोपडी छपायके भेजी उसमें लिखा है बाईस टोलेवालोंका संप करणेका विलकुल दिल नहीं दिखता क्योंके २२ संप्रदायके तरफसें जो समाचार अहम्मदावादसें निकलता है उसमें दत्तसूरजीकों कोकशास्त्रका वणाणेवाला लिखता है, इसवास्ते हमारा जवाव है श्री जिनवल्लभसूरिःकै पट्टप्रभाकर लाखों घरोंकों जैन धर्म धराणेवाले दादा गुरुदेव जो जगे २ जैन सघसें पूजनीय इन श्री जिनदत्तसूरिःने तो कोईभी कोकसंवंधी ग्रंथ वणाया नहीं क्या समझके लिखते हो दत्तसूरिः इस नांमके दो तीन और भी आचार्य हो गये हैं वेगड खरतरमें भये है उनोंने कोइ ग्रंथ वणाया सुणा नहीं एकदत्तसूरिः वायड गछमें भये है उनोंनें विवेक विलास शकुन ग्रंथ जो की हीरालाल हसराजनें गुजरातीमें छापा है इत्यादि ग्रंथ इनोंनें वणाया है न तो ये दत्तसूरिः परकाय प्रवेशनी विद्या सिद्ध थे न इनोंके नांमके पिछाडी जिन संज्ञा है नहीं कोई इनोंनें राजन्य वंसी अन्य मतियोंकों माहाजन वणाया है नदादाके नांमसें इनोंकी चरण थापना पूजे जाती है वायड गछी दत्तसूरिः सवत विक्रम १२७५ में भये हैं जिनोंनें वस्तुपाल तेजपालकों उपदेश देकर द्रव्य भेषधारियोंका वंदन सत्कार सरू कराया है ये वात प्रवंध चिंतामणीमें लिखा है और दादा गुरुदेव श्रीजिनदत्तसूरिः खरतर गछ नायक जिनोंनें संदेह दोलावली चर्चरी आदि अनेक धर्मी उपगारी ग्रंथ वणाया

है उनोंका स्वर्गवास तो संवत १२११ में अजमेर नग्रमें हो गया इसवास्ते खरतर गछी श्री जिनदत्तसूरीश्वरनें तों कोई कोकसंबंधी शास्त्र वणाया नहीं अगर वणाया होय तो वो ग्रंथ कहां है क्या नांम है सो वाईस संप्रदाइयोंनें नाम प्रगट जाहिर करणा लेकिन् दुसरा जबाब यह हैकी ८४ गछ्कै किसीभी आचार्यनें पूर्वाचार्योंके वचनोंकै प्रमाणसें कोई भी ग्रंथ रचा होय तो सब गछवालोंकों यथार्थ माननीय है जेसें भद्रबाहू स्वामीनें जोतिषकै निमित्तके भद्रबाहू संहितादि ग्रंथ वणाया सामुद्रक वणाया तो इसमें दोष क्या है तीर्थंकर परमात्माकै ज्ञानमें कोईभी विद्या वाकी नहीं चवदै पूर्व्वसें बाहिर कोई भी अक्षर विज्ञान वचा नहीं २२ संप्रदाई द्वेषबुद्धि छोडकै ३२ सूत्रमें ही हृदय पट खोलकै तो देखे क्या इन सूत्रोंमें वैस्याओंका वर्णन विपाक सूत्रमें नहीं है और सुंदर स्त्रीका वर्णन क्या उवाई सूत्रमें नहीं है नगरकोट खाइ घोडा हाथी कोनसा वर्णन वाकी है जरा तत्व दृष्टीसें विचारो चार अनुयोग रूप सूत्रोंमें कोनसी वात वाकी है तो क्या अर्थ कहणेवाले तीर्थंकर सूत्र रचणेवाले गणधरोंकों २२ संप्रदाई दोषारोपण करेगें ७२ कला ऋषभ प्रभूनें जाहिर किया और उस शास्त्रोंका सारांश प्रकरण आणेसें सूत्रकारोंनें जगे २ दरसाया है उपदेश सब अनुयोगका होता है आदेश एकांत निरवद्यका तीर्थंकर गणधरकी आज्ञा मुजब होता है इसवास्ते हे पक्षपातियों बहुश्रुतियोंकी सेवाकर शास्त्र रहस्य समझो जती साधू डंड रखते हैं वो ओपग्राहिक उपगरण सूत्रों की आज्ञा मुजब है थिवर कल्पमें दंड रखणा सिद्ध है भगवती सूत्र तथा दसवैकालिक सूत्रमे दंडंवा १ कुंडंवा २ पडिलेहण करणा लिखा है बारे कालीमें नहीं चला है, एसी वात लिखणी चाहियै जो की

शास्त्र सूत्रसें विरुद्ध नहीं होय एसे २ लेख अज्ञपणा सिद्ध करता है और हम तो तुमकों मित्र भावसें यथार्थ उत्तर लिखा है जो प्रश्न पूछेगा और झूठा आक्षेप करेगा उसकू क्षयोपशम मुजब जवाब देणा जैन पंडितोंका धर्म है जो २२ संप्रदाई तथा मतांध लोक एक वडी जैन कोग्रेंस भरकै. सुधारा और सपका प्रयत्न चांवे तो वहोतही कल्याण कार्य हो जाय पहला पक्षवादी जब पक्ष उठाता है तब यथार्थ प्रत्यव स्थान करणा होता है तुम पक्षपातकै नमूने दरसाते हो इसकूं तदन बंध करो तो सब मिसल वैठ जाती है ।

हमारे इहां छपे भये तइयार ग्रंथ.

दादा गुरु देव मत्र युक्त गायन पूजा परचोंका संक्षेप वृत्तांत ।

मोलेचाणाक्यका अर्थ,शकुन,काम होगान होगा पासाडालणेका,स्वरोदय ।॥

सिद्धमूर्त्ति विवेक विलास मूर्त्ति स्थापना कायदेसें सिद्ध प्रथम भाग ॥

दूसरा भाग जिसमें ढूंढियोंके ७४ प्रश्नोका जवान द्रव्यपूजा ३२सूत्रसें ।॥

रत्नसमुचय (रत्नसागर) सें अनेक वस्तुयें जादा प्रतिक्रमण चैत्य वदनादिक स्तोत्र वारे मासी तपस्याओकी विधि मंडल पूजा खरतरगच्छतपागच्छका एसा कोई कर्त्तव्य वचा नहीं सो इसमें नहीं हो एक पुस्तक पासमे होणेसें दुसरी धर्म क्रिया वावत श्रावगोकों २० पुस्तक नहीं चहिये ८०० पन्ने अठ पेजी पके पूठे ग्लेज कागज कम कीमत । ४।

पूजा महोदधी खरतरगच्छतपा गछकी गाणेकी ३७ पूजा मंत्र तथा विधियुक्त. २॥

श्रावक व्यवहार चमत्कारी धर्मकै साथ रुजगार धन पैदा करणेका ग्रंथ १

वैद्यदीपक इसमें ७ प्रकाश है प्रथम प्रकाशमैं जगत्का अनादि स्वरूप जीव कर्मका संबंध दरसाया है प्र० २ में वदनकै सब संचेंका खुलासा अंग्रेजी देसी दोनोंका सामिल किया है नाम देसी अंग्रेजी दोनों है प्र० ३ में, हवा, पाणी, विगडणेका कारण, पहचाण, सुधारणेकी तजबीज, प्लेग नही होसकै, वेमारी कोई भी नहीं हो सके, मकानके विगडी हवाकूं पहचाणना, साफ करणा, अनाज फल फूल साग दूध दही मखन छाछ मसाला तेल घी चा इनोंका गुण अवगुण केसें खाणा पीणा जिससें तनदुरस्त रहै एसी विधि, स्नान, कसरत, मर्दन, दांतन, पानसुपारी इन सवोंका तनदुरस्तीकै साथ वर्त्ताव, छ ऋतुओंका पथ्य षट्र रसका गुण अवगुण इत्यादि प्र० ४ था अपणी तासीर वायुकी है, या पित्तकी, कफकी, या खूनकी है, इसकी पहिचाण, वात पित्त कफ खून काहेसें खराब होकर, बेमारी आती है, वो सब दरसाया है फेर-नाडी, पेशाब, जीभ वगेरे, देसी, डाकदरी, दोनुं परीक्षा रोग पहचानकी लिखी है, अपणी वेमारी आप पिछान सकता है प्र० ५ में घी, दवाका तेल, पाक, मुरव्वा, गोली, सरवत, काढा, चटणी, मह्लम, लेप, रस, गुलकंद, वगेरे सब चीजोंकै वणाणेकी विधि, जुलाब, उलटी कराणेके रोग, तथा विधि, गरम पाणीसें तथा ठंढे पाणीसें पेटमें विगर दवा दिये रोग मिटाणा, सब दवाइयोंकै गुण, अवगुण, तेतीसही अक्षर १४ स्वरोंकै दवाका नाम अनुक्रमसें, देसी दवा सोधनविधि, अनुपान रोग २ का जुदा २, अंग्रेजी तोल माप, मात्रा ऊमर मुजब देणेका प्रमाण, रोग २ प्रति मिटाणे

काढा, गोली, चूर्ण, देसी, तेसें अंग्रेजी मिक्श्चर,मुसलमानी यूनानी नुसैके, होमियोपथी क्रोमोपैथी, इलाज सब रोगोंपर, प्र० ६ में रोगके कारण लक्षण २० इलाज देसी डाकदरी हकीमी ओर होमी-योपथी पथ्य कुपथ्य फेर स्त्री रोग लक्षण इलाज पथ्य सतान पैदा करणा ऋतुधर्म वधनका इलाज बचोंके रोग लक्षण इलाज पथ्य, जानवरोंके रोगोंके इलाज, जंगम जहरोंका इलाज, थावर सोमल अफीम पारा हरताल धतूरा कणेर. डाकदरी जहर सबोंका इलाज, मरदमीका इलाज, ब्राम्ही मोहरा गुटिका वणाणेकी विधि, पुत्र पैदा करणा इत्यादि ग्लेज कागद ८०० पन्ने, ३५०० करीब ग्रंथ, जिसकी तारीफ लिखणे कलम बेहाल है हर गृहस्थियोंको घरमें रखणेकी जरूरी है, क्योंके पहली सुख निरोगी काया, दिव्य अक्षर, निर्णयसागर, मुंबईका छपा. ५

इन किताबोंके जो दाम लगाये है उसका कमीसन काटके लिखा है शकुन ग्रंथ खरतर गच्छाचार्य दादा साहिब विरचित मूल भाषा छंद कर्त्ता उपाध्यायजी इसमें विदेश विदा होते या हरकाम जाते जो शकुन मनुष्य आवे उसका फल देस छींकका अंग फुरकणेका वर्षात इस वर्षमें किस महीने वरसेगा पहले मालम होणा घर कराणे जमीन लेणा उसकी अच्छी बुरीकी परिक्षा नींव खोदते पदार्थ निकले उसका शुभाशुभ फल इत्यादि दरसाकर गुरुदेवनें एसा अजबी परीक्षा धरी है के कोई किसमका व्यापार करणेवाला चेत सुदि २ वरस वैठते चद्रमाका टग देखो मजाल क्या है जो धन न पैदा करै उस मुजब करे तो जरूर लाभ उठावै मारवाडी

भाषाकै सुभाषित राजियेके दोहे १२४ किताब रत्न छोटा मगर गुणका रत्न यथार्थ है. १

अब छपता है सो ग्रंथ ओसवंश मुक्तावली.

जैन धर्म चलता कम कैसें पडा फेर किस २ आचार्योंनें गोत्र माहाजन किये प्रथम १८ गोत्र ओसियांमें होणेका इतिहास साल संवत, वाद भोजकोंका इतिहास राजपूतोंकी जात तातेड वगेरे अठारोंकै नाम आचार्य रत्नप्रभसूरि प्रतिबोध बहुत विवरण है, सुहाचिंती गोत्र, वरढियागोत्र, कोठारी वडेर चोपडा गांधी साख १२ धाडेवाटाटिया कोठारी, झावक झांमड झंवक, चोरडिये पारख गोलछे सावसुखा साखा प्रतिसाखे मिलकै ५० तीर्थभाई १८, भणसाली चंडालिया भूरावद्वाणी, लूंकड, आयरिया लूणावत, वहु फणा वापना गोत्र ३७ नाहटा पटवा साखा प्रतिसाखा, डागा मालू भाभू पारख छोरिया, रांका सेठी सेठिया जात ७ साखा प्रसाखा, राखेचा पूगलिया, लूणिया, डोसी सोनीगरा, सांखला सूराणा सियाल सांड सालेचा, आघरिया, दूगड सेखाणी कोठारी सुघड, मोहीवाल गांग दूधेडिया साखा १६, बोथरादसाणी फोफलिया वछावत साखा ९, गेलडा जगतसेठ, लोढा २ तरेके, बोरड, नाहर, सिंघी नवलखा, सालेचा बोहरा, वांगाणी, भंडारी डागा तिलेरा बोहरा ढढा श्रीपती, पींपाडा, घोडावत छज लाणी, कठोतिया, भूतेडिया, जडिया कांकरिया आ॰डा खटोल श्रीश्रीमाल वावेल संघवी गडवाणी भडगतिया रूणवाल वंगाणी पोकरणा कोचर मुंहतोका विस्तार वर्णन, वैद, मीन्नीखजानच। भुगडी, मुहणोत पींचा, वाकबकारी खबर, कच्छ देसी श्रावकोंका वृत्तांत, श्रीमालगोत्र उत्पत्ती १३५ नख, पोरवालगोत्र उत्पत्ती २४ नख, हूंवडगोत्र,

श्रावगीगोत्र ८४ वघेरवाल गोत्र ५२ नरसिंघपुरा गोत्र २८ गौरारा गोत्र २२ अग्रवाला गोत्र १७॥ सतरे इन सबोंका इतिहास कोण राजपूत किसतरे जैनश्रावक भये सो कारण संवत् किस आचार्यनें प्रतिबोध दिया इत्यादिक बहुत विस्तार वाला अद्वितीय प्रमाण युक्त छपता है लेणेकी सीघ्रता करणा एसा दुनियांमें कोण होगा सो अपणे पूर्व वडेरोंकी वातोंसें वाकवकार न होय ८४ वणियोंकी जात १२॥ न्यात मोजेकोंके ऋषीगोत्र गांम वेद साखा प्रवर माता भेंरू गणेश सारी सोलेही गोत्रोंका विवरण इस ग्रंथमें निर्णय यथार्थ दरसाया है प्रथम मूल्य भेजणे वालोंमें टपालखर्च माफकर १।) सवा कलदार लिया जायगा जती पंडतोंके वास्ते ये कल्पवृक्षही समझणा इसग्रंथकूं रजीष्टर कराया सर्व हक्क कर्त्ता स्वाधीन है सो कोईभी लिखेगा या छापेगा वो दडका भागी होगा

इसकेबाद स्वप्न जो प्राणियोंकू आता है उसका फल मिलाणेका शास्त्र और पुरषोंके बदनके सब शुभ अशुभ लक्षण चार जातके पुरुष फेर स्त्रियोंकै शुभाशुभ लक्षण चार जातकी स्त्री इसकै सग अनेकानेक वर्णन दुनियांमें कामकै अर्थी प्राणियोंके हजार नेत्रका उजाला ये ग्रंथ कराणेवाला है छंद भाषा दोहा सोरठा वध उपाध्यायजी रचित है १) ये सब पुस्तक मिलणेका ठिकाणा वीकानेर राजपूताना मोहल्ला रांघडी उपाध्याय श्रीरामलालजी माहाराजकी विद्याशाला, पत्र देणा, प्रकाशक मत्री पडित वैद्य श्रीजीवणलालमुनिः सर्वहक्क मालक शिष्यपेमचंद अमरचंद ॥ टिकट भेज सूचीपत्र मंगा लीजिये वैरग नाटपेट पत्र न भेजें पुस्तक मंगाकै लोटायगा परदेससें वो परमेश्वरसें गुनहगार होगा लायकोंके लिये इतनाही बस है ॥

सूचना.

इस जिनाज्ञा प्रदीप (सिद्धमूर्ति विवेकविलास) भाग दूसरेमें जो प्रतिमा उत्थापक मतकी उत्पत्ति लिखी है सो विक्रम संवत् १६०० सें में त्यागी वैरागी क्रिया उद्धारी अकब्बरबादसाहकों सब दर्शनियोंसें पहले पहल खरतर गछाचार्य श्रीजिनचंद्रसूरीश्वर लाहोर नग्रमें दया-धर्मका उपदेश देकर अनेक तरेसें जैनधर्मका उद्योत करा, सर्व प्रजाका अत्याचार दुख, जो हूमायू बादसानें जारी किया था सो सब बंधकर-वाया इसबातका विवरण हमारा संग्रह किया भया ओस वंशमुक्ता-वली ग्रंथमें बोथरा बछावत वंशावलीमें लिखा भया देखणा, उन महाराजाके साधू शिष्यनें चोपई बणाकर लिखा वेसा हमनें लिखा है इन सूरीश्वरकै दोय साधू महाविद्वानोंकों बादसा अकब्बर गुरूकों अर्ज करकै अपणेकों धर्म शिक्षा होती रहै इसवास्ते दिल्लीमें संग लेगया था एक तो वेष हर्षमुनिः दुसरे परमानंदमुनिः । तपागछ खर-तर गछकै आपसमें बहोत संप चलता था इन दोनों खरतर गछी जतियोंनें बादसाह अकब्बरसें सुपारस करकै तपागछ नायक हीर विजयसूरिःकों गुजरातसें बुलाकर बादसाहसें अरज करकै मोहर छापकै कागद फुरमाण पत्र पंचतीर्थ जैनश्वेतांबरोंकै कबजाके लिये करवा दिये कारण ये समझके की जेसें श्रीजिनचंद्रसूरिः युगप्रधान जैनधर्मके प्रभावक तेसें ही हीरविजयसूरिः प्रभावक इससें अवल फुरमाण कर-मचंद बछावतकूं गुरूमाहाराजनें सोंपा था सो बीकानेर बडे उपाश्र-यमें बडे भंडारमें मोजूद है नकल खरतर गछ श्रीपूज्यजीमाहाराजजी पास मौजूद है एसा २ विचार देख फुरमाण लिखवादिया तपागछी उसकी नकल यथार्थ सागर तपागछके पाटियादार नाणचदजी मुंबईसें मासि

कपन्न विवेक प्रकाशमें छापी वो यथार्थ है, श्रीजिनचंद्रसूरिः परमत्यागवान बादशाहनें जो जो फुरमाण नजर किये वो सब करमचद बछावतकों बादसाहसें दिलादिया वो अरब्बीका लिखा हमनें आंखोसें देखा है फेर दिखा सकते हैं,

(प्र०) आपने तो वेष हर्ष परमानद जतीकों खरतर गछका लिखा है और हमनें एक प्रसिद्ध मोटेमाहाराजके छापे भये और बणाये भये ग्रंथमें पढा हैं के वेष हर्ष परमानंद जती तपागछी आचार्यके चेलेथे सो ये क्या बात है एसे जगप्रसिद्ध माहाराजका लेख मांनता तुमारा लेख कोण मांनेगा (उ०) अगर प्रमाण युक्त वचन किसीभी बुद्धिवांनका हो माननेमें हरजा नहीं वे प्रमाण अहकार बस फक्त अपणी बडाई रूप वचन कोइ लिखेतो माननीय कभी नही होसकते चाहै मोटे माहाराज हो चाहै छोटे माहाराज (प्र०) आप प्रमाण देकर उण जतियोंका खरतर गछीपणा सिद्ध करदोगे तो निरापेक्षी तो मांनही लेगें पक्षपाती नहीं मांने तो क्या वो न्यायवंत कहलांयगे, कभी नहीं, लिख बताइये, (उ०) हे मित्र! सब प्रमाणोंमें प्रबल प्रमाण कोनसा है तो सब दुनियोंमें मसहूर हैकी, प्रत्यक्ष प्रमाण, हे मित्र ले हम प्रत्यक्ष प्रमाणसें वो दोनूं साधू खरतरके थे एसा सिद्धकर देते हैं वेषहर्षमुनिःके शिष्य विजयहर्ष उनोंके शिष्य शांतिहर्ष इनोंका शिक्ष जिनहर्ष यो चारों पीढियोंकी निसाणी ये क्रिया उद्धारी रहै जिनहर्ष जीनें महाबल मलयासुंदरीकी चोपई श्रावककी करणी लघु चोपई अनेक चोढालीये अयवंती सुकमालका नोढालीया सिझायों वगेरे अनेक भाषा ग्रथ संस्कृत प्राकृत ग्रंथमें खरतर गछ श्रीजिनचंद्रसूरि चोथे पट्ट धर पूर्वोक्त चंद्रसूरीका राज्य शासन लिखते हैं क्योंकी खरतर

गछमें । परंपरा है सो चोथे पाटधारी आचार्यका नांम श्रीजिनचंद्रसूरिः होता है जब रंगविजयगणीनें रंगविजय खरतर शाखा फांटी तव शांतिहर्ष और जिनहर्षजी उस साखामें चलेगये वाद इनोंके केइ शिक्ष भये जिनोंकी नंदी (नाम) भिन्न २ श्रीजिनचंद्रसूरिः उस साखा-वालोंकीथा पना फेरदी कारण खरतर गछमें चोरासी नंदी चलती है चोरासी गछ इससेंसें भये इसवास्ते मगर जो त्यागव्रत उत्कृष्टता रखता है वो किसी कारण नंदी आचार्यसें लेता है जेसें उपाध्याय क्षमाकल्याण-गणिः दीक्षाकी कल्याणनंदी है इनोंकै धर्मानंद धर्मविशाल दीक्षानंदी सुगणगणिः सुमति मंडण दीक्षानंदी ये संवेगी साधुंओनें खरतराचार्य पास नंदीली और कोई नहीं लेकर अपणे पूर्वजोंकों आचार्यनें नंदी दी उसीपर ही चलता है इस वखत क्षमा कल्याणजी माहाराजकै सिंघाडे वाले जैसे राजसागर ऋद्धिसागर सुखसागर भगवानसागर सुमति-सागर मणीसागर इत्यादि प्रणाली चला रखी है वेसेंही चार पीढीतक वेषहर्ष साधूके संतान जिनहर्षजीतक हर्षनंदी चलाई बाद इनोंकै शिक्ष प्रशिक्षोकी नंदी क्रम मुजब बदलाई गई जिनहर्षजीकै एक महा-विद्वान शिष्य श्रीसार जिसनें आनंद श्रावगकी गायनरूप संधी बनाई उसमें जिनहर्षगणीका आपशिक्ष लिखता है इसनें रंगविजय खरतरमेंसें श्रीसार गछ खरतर शाखा फेर फांटी एसे खरतर साखा ११ मूल खरतर १ एवं १२ आचार्य सबोंकी प्ररूपणा सामाचारी अभी भी एक है कोई बातका फरक किसीनें नहीं किया, इस प्रमाणकी प्रत्यक्ष सबूती उनोंकै संतान रंगविजय साखा खरतर गछमें मौजूद है अब श्री परमानंदजी जैनधर्मकै महाप्रभावीककूं उपाध्यायपद श्रीजि

नचंद्रसूरिःने स । १६२५ में इनायतकी और फुरमाया तेनें जैनधर्मके सघमें परमानद ही वरताया इसवास्ते तेरे संतानोंकी दिक्षा की नंदी आचार्य वदलायगें मगर प्रसिद्धनाम तो नदही रहेगा तवसें उनोंके शिक्ष प्रसिक्षोंकी वो प्रनाली चली इसमें कलकत्तेमें खरतर भट्टारक गछके आदेशी दुर्गानंदजी जिनोके शिक्ष रत्नानंदजी उनोंका शिक्षविद्वान सदानंद नामका २५ वर्षमे देहांत भया तव रत्नानंदजी संवत् विक्रम १९२० मे क्रिया उद्धारी ५० हजारका द्रव्य त्याग महाव्रती होगये श्रीजिन मुक्तिसूरीश्वरके मवईकै श्रीमाहावीर स्वामीकै पाटियादार आ देशी सदानदजी ज्ञानानंदजी सं । १९५७ में देहांत भया कमलानंद मुनिका पोत्रा श्रीजिन कीर्त्तिसूरीश्वरका आज्ञाकारी हेमानंद अभी जालणे सहर दक्षण १९।६६ वर्त्तमान मोजूद है मंबई हमसें मिलणे संघयुक्त आया था उस वखत राय वद्रीदासजीकै मुनीम श्रीजमनालालजी कोठारी हमारेसें धर्मचर्चा प्रश्न पूछता था मेनें कहा प्रत्यक्ष देखलो ये परमानंदजीका सोलमाशंतान प्रत्यक्ष हाजर है मनमें संका होय तो चिठ्ठीद्वाराया प्रत्यक्ष देख निश्चयकर सकते हो ये मेरा लिखा प्रतक्ष प्रमाण वडे २ कलकत्तेकै यती सव गछकै और श्रावक सव रत्नानदजीकों देखणे वाले मोजूद है रायसाहव वद्रीदास-जीने तो दुर्गानंदजीका हजारों दिनोंतक धर्मध्यान सुणा हैं और भी वुड्ढे श्रावक वाकवकार मोजूद है एसाई मवईमें मोजूद है न मानो तो इहाकै रातदिन रहणेवाले सागर गछी नाणचंदजी अखैचदजी जतीसें निश्चय करलो इस वातकूं अहम्मदावादी सूरती गोढ वाडिये सव संघ वाकवकार है क्योंकी ९।१० वर्षही उनोंकों मरेवीता है

मोटे माहाराज अगर इस अपेक्षासें लिखते होयकी खरतर गछ तपगछ दोनूं एकही है और तत्वदृष्टिसें एकही है तब तो कोई दुसरी बात नहीं अगर अहंकार द्वेषापत्तीसें लिखा है अपणे पक्षकी महत्वता दिखाणे तब तो जो कुछ प्रमाण युक्त है सो हमनें लिखदिया है इसमें कोई दलील नहीं है और हे श्रावको तुमारा तो ये हाल इस वखत पक्षपात दृष्टि रागसें बणरहा है जैसें एक किसीनें कहा अरे बैठा क्या देखता है तेरा कान वो कउआ अभी लेकर उडगया तब वो कउएके तरफ देखता है मगर घरका कान नहीं संभालता जरा किसीनें त्यागीपणेकी अथवा कडाकै निकालणे शीतउष्ण सहणे आदि ढंग दिखाया जब एक चला तो दुसरा तीसरा एवं गडर प्रवाह सरू होजाता है जेसें (दोहा) एक भेड आगेचली, पीछै चली कतार, एक भेडकूएपडी सबी भेड उसलार इसवजै भारतवर्षकै बुद्धिहीन केइ अद-म्योंपर इतिहास तिमिर नासकमें लिखा हैं एक सेठसाहबकों जोतसी जीकै वचनोंका पूरा विश्वास था मानूं परमेश्वरही है उनोंनें जन्मपत्रीमें ४५ वर्षहीकी ऊमर सेठजीकी वर्त्तीथी अमुक लग्नमें उसदिन देह छूटेगा बस लोकोंसें सेठसाहब फुरमाणे लगे हम उसदिन निश्चै मर-जांयगें घरवाले रोणे पीटणे लगे किसी बुद्धिमाननें समझाया अरे क्यों रोतेहो एसा क्या जोतषी कुछ केवली तो है ही नहीं ५ बात मिल जाती ५ नहीं भी मिलती रागद्वेशका भरा महत्वपणेका भरा एसेंकों एका एक परमेश्वरतुल्य मानना ये कोई बात है किसी आपके बडेरेकी बनाई पोथी थोथीसें लिख मारा होगा एसा समझाकर धीरज दिया बस वोदिन निकल गया महीनाबरस निकलगया लोक कहणे लगे

क्यों सेठसाहिब जन्मपत्रीका लेख कैसा है सेठसाहिबनें फरमाया सच सच है हमतो उसीदिन मरचूके थे जो दिन पडितजीनें फरमाया था क्या कभी पंडतजीका लेख झूठा होसकता है आगू उनोंकी लिखी वीसों बात सच निकली तो ये बात कभी झूठ नहीं है, बस भाई विश्वासधारियोंका एसा ढंग इस वखत चलता है चाहे केसाही हो बस मोटेमाहाराज लिखगये गप्पसप्प ग्रंथपर धप्प लगाणेवाला लिखता है कल्पित पट्टावली मोटे महाराजनें लिखी है सो प्रमाण करणे लायक नहीं ये लिखणेवाले भी जगप्रसिद्ध पुरुष है बस विचार करो गुरु अगर असत्य बात लिखदी है तो चेलेजी ज्ञानवंत न्यायवंतके खटकती ही है इसवास्ते हे धर्मबंधुओ एकता कर संप करो आनंद-घनजी क्या लिखते हैं, गछना भेद बहु खेद निहाळतां तत्वनी बात करता नलाजे उदरभरणादि० जिम २ बहुश्रुत बहुजन सम्मत बहु शिष्यैपर वरियो तिम २ जिनसासननोवैरी निश्चै भवजल दरियो १ यशो विजयोपाध्याय इस वचनमें कमाल करगये हैं जो बहुश्रुती बहु-तोंका पूजनीक बहुत चेलोंवाला होता है तेसें २ जिनआज्ञा विरुद्ध प्ररूपणा करणेवाला होकर भवसमुद्रमें गोते खाता है सो हाल प्रत्यक्ष देखा बणगया इसवास्ते सर्व संघके त्यागी एकता कर जैनधर्म बढे एसा प्रयत्न बांधो सामाचारी निज २ का झगडा छोड एक जिन-आज्ञा स्याद्वादसें चलो ५० श्रथकी सम्मती भद्रबाहूस्वामी प्रमुख श्रुतकेवलीकी आणा जो सामाचारी प्रमुख आचरते हैं एसे खरे साधूकों असाधू कहणा भूल है जिनवाणीके अनुयोगके पढणेवाले क्रियावंत तपेश्वरीकों असाधू किस न्यायसें कोइ कहसकता है साधूकूं असाधू कहणा भूल है जेसें ८४ गच्छाचार्यनें जैनधर्म सपसें चलाया एसे

चलाणा ही उदयका कारण है इसबखत खरतर गछ तपगछ कमला गछ आंचल गछ विजय गछ तथा जिनप्रतिमांकै मांननेवालै गुजराती नागोरी उत्तराधी ये सब मिलकै लोंकागछ सबोंकों अपणे प्राणवत् समझो ये सब गछवाले जिनप्रतिमाके जैनसूत्रागमकै वंदक पूजक माननेवाले हैं क्योंकै गुजराती लोंकागछी नरपति चंद्राचार्यकै हुकमसें मनसुखलालजी ऋषीनें धर्मसिंधु पुस्तक छापा है उसमें सर्व विद्यमान लोंकागछ कुवरजी पक्ष धनराजजी पक्ष तथा नागोरी उत्तराधियोंकी सर्व सम्मती जिनप्रतिमा जिनसारखी मांनते हैं कोई संका नहीं इसवास्ते सम्यक्ती धर्म बंधु है ॥

(प्र०) जतीलोक श्वेतांबरी तो आपसमें मिलते हैं तब तो हमने पूर्वोक्त गच्छीयोंकों बहोत ही संप करते देखा है एक २ कों वंदन आपसमें आहार पाणी आदि एकही मानूं देखा है भिन्नता देखी ही नहीं कोण जाणे प्रमादी गुणठाणे वर्त्तने लगे इसवास्ते सामाचारीका झगडा नहीं करते होंगें और नहीं करते हैं मगर हमने तो इसवखत नई रोसनीवाले जो त्यागी वैरागी बडे २ माहाराज विजयजी सागरजीकै तो आपसमें बडाई ही सामाचारीकै झगडेकीही देखी है माहाराज आत्मार्थी होकर दोनों ८४ गछमेंकै एक गूरूके चेले होकर द्वेषभाव क्यों रखते हैं ये होणा बुरा है (उ०) हां भाई तदन बुरा है इनोंकों चाहिये गृहस्थोंकों अपने मंतव्यकों पंचागी सिद्धांत प्रमाण उपदेस करते रहै आपसमें न झगडै श्रावककों संका पडे तो दोनोंका प्रमाण पूछ निश्चय करलेवै जिसकै पास जादा ग्रंथोंकी सम्मती वो तो यथार्थ खरा और नयवादका कारण अपेक्षाकै कोई वचन किसी ग्रंथमें

होय तो वो नयवाद भी सच्चा मगर कारण विचारणा संका त्याग श्रद्धापूर्वक धर्म करते रहणा सामाचारीका झगडा वृथा है ग्रंथसूत्रके वचनोंमें नयवाद है, आगे २ पूर्वाचार्योंका लेख देखते हैं तो एकांत पक्ष नहीं लिखा देखते हैं एकक्रिया लिखकर लिखा है केइयक आचार्य फेर एसा भी कहते हैं, एसा लिखा है मगर आजकल वालोंकी तरे एकांत पक्ष ठहराणा नहीं दिखता क्योंके एक तपागच्छमेंसें १३ संप्रदाय निकली, केइ आगमिया पाटणिया काजा कडुआ साकर कोथला आत्म इत्यादिक १३ सें भी ओर २ मतांतर निकले ये सब गुजरातमें, रविसागरके चेले शांतिसागर संवेगीनें इछामत निकाला अहम्मदावादमें, प्रतिमा उत्थापकमत भी गुजरातमें, तपागछकी समाचारीकों क्या समझ २ छोड २ के नई २ कल्पना करते गये इसतरे पचमकालका स्वरूप वणणेसें एसा २ हाल वणता गया पार्श्वचद्रजी भी तपागछमेंसें भिन्न सामाचारी निकाली इसवखत वड गछके आचार्य स। १९।६६ कार्तिकमें सिंहसूरी हमसें मंबईमें मिले और अपणा प्रवाह पट्टावली अविछिन्न परपरा वडगछमें मिलाई तव हम तो अचरजमें रहगये की मोटे महाराज तो लिखते हैं तपागछ है सो ही वडगछ है और फेर ये वडगछ कहांसें आगया इसतरेका स्वरूपमें क्या समझमें आणेकी वात है केवली भगवांन ही जाणे वस आखिरकों सब गछवालोंसें मे अल्पवुद्धि क्षमापन मांगता हूं चार चोकडी उपशमावे क्षयोपशम करे क्षय करे वो अन्यदर्शनी भी परित्त ससारी होता है तो क्रोध १ मांन २ माया ३ लोभ ४ घटाणे वाला जैनधर्मी मुक्ति जावे इसमें संका नहीं। आपका अभिन्न हृदय उपाध्याय श्रीरामलालगणिः शिष्य पेमचंद अमरचंद

हमारे छपे भये ग्रंथ.

रत्नसागर (रत्नसमुच्चय)	५
जैन सूत्रोंसें वैद्यदीपक भाग पहिला	५
पूजा महोदधी खरतर गछ तपागछ पूजा ३७	२॥
श्रावकोंका रुजगारी ग्रंथ	१
चाणक्य १६ अर्थ, जैन स्वरोदय, शकुनावली	॥।
मूर्त्ति मंडण प्रथम भाग	॥
मूर्त्ति मंडण भाग २	॥।
तेजी मंदी काल जमाना शकुन वगेरे बहोत संग्रह	१
दादा साहबके परचैका मंत्र गायन पूजा	।

छपेगासो ग्रंथ.

ओसवंस १४४४ गोत्र इतिहास उत्पत्ती	१
स्वप्नेका फल अंगके शुभाशुभ चिन्ह फल जैन	१
धूर्त्ताख्यान १८ पुराणोका	।
ईश्वरकी परिक्षा	१

परदेसी ग्राहकोंकों पोष्ट खरच जुदा लगेगा नाटपेट पत्र नहीं लिया जायगा अछे निर्णयसागर छापेके मनोहर टाईप, ग्लेज वढिया कागद, मजवूत पूठे तारीफ पढणेसें मालम होगा पुस्तक मिलणेका ठिकाणा— वीकानेर राजपूताना विद्याशाला उपाध्याय श्रीरामलालगणिः मंत्री पं० श्री जीवणमल प्रेमचंद अमरचंद प्रकाशक ॥

श्रीजिनाय नमः

अथ विज्ञापन ॥



॥ मालमकरणेमें आता है श्रीयुत पारखगयवरचंदजीने सांडकेसरी-चंदजीके संग पजावके ढूढियोंकी तरफसें छपी जो पुस्तक सो हमारे पास भेजकर उसमें लिखे ५ प्रश्न उसका जवाव मांगा सो प्रश्नका सारांस एसा है (प्रश्न पहिला) २४ तीर्थंकरोंके चक्रवर्त्तादिक घणे श्रावक भये उसमेंसें किसने मंदिर वणवाया वणवायगा सो पूजेगा और कोण विधिसें वणवाया उनोंका नाम सूत्र और अध्ययन लिखणा (प्रश्न दूसरा) आचारांग सूत्रमें कहा है ससारके जीवछकारणसें हिंसा करतें है प्रथम आजीविकावास्ते १ दुसरा प्रससाके वास्ते २ मानके वास्ते ३ पूजाके वास्ते ४ मुक्तिकेवास्ते ५ छठे रोगादिक मिटाणेवास्ते उनोंकों अहितका कारण होगा वोधवीजका नास होगा मिथ्यात्वका कारण होगा तो तुम मूर्तिपूजासें धर्म केसें मानते हो २ (प्रश्न तीसरा) प्रश्न व्याकरण सूत्रमें पांच आश्रवद्वारमें मंदिर प्रतिमा चरणपादुका आश्रवद्वारमें लिखा सवरद्वारमे मदिर प्रतिमाका नाम नहीं दया संजमकूं संवर लिखा है तो तुम मदिर प्रतिमा धर्ममें केसें मानते हो ३ (प्रश्न चोथा) कामदेवजी श्रावगकूं पोसामें देवतानें उपसर्ग कीया तो भी डिगे नहीं तव भगवाननें तारीफ क्रिया लेकिन किसी प्रतिमा पूजणे वालेकी तारीफ करी होय तो वतलावो ४ (प्रश्न ५ मां वहोत जीवोंकों तपस्या करते लवधियां उपजी अव धिज्ञान उपजा लेकिन् प्रतिमा पूजणेसें किसकू लब्धि और ज्ञान उपजा सो

जबाब लिखो भगवानकी द्वादशांगी वाणी प्राकृतमे हैं लेकिन् संस्कृत और भाषामें नहीं है इसवास्ते हम तुमकों संस्कृत तथा भाषा निर्युक्ती टीका वगेरा नहीं पूछते हैं सूत्रका अध्ययनका उद्देसाका नाम लिखणा ये ५ प्रश्नोंका जबाब भव्यजीवोंके उपगारार्थ आत्मकल्याणार्थं सूत्र-सिद्धांतकी साक्षीसें न्याययुक्त जबाब लिखा है, सिद्धमूर्तिं विवेक विलास जिन आज्ञा प्रदीपका भाग दूसरा है, जिन २ धर्ममूर्तियोंनें इस ग्रंथकूं छपाणे पहली मदत करी है उनोंकों धन्यवाद और धर्मलाभ स्वर्ग मुक्तिके लिये होगा, जो कोई पाषंडी निन्हवोंके खोटे उपदेससें तीर्थंकरके कहै सनातन धर्मसें डिगता होय, उन २ जीवोंकों स्थिरकर-णेकों एकेक पुस्तक दे दे कर मुक्तिसुख उपार्जन करो श्रीरस्तुः श्रीजिनाय नमः श्रीधर्मशीलसद्गुरुभ्यो नमः श्रीसरस्वत्यै नमः

अथ भूमिका हितोपदेश

अहो जैन धार्म्मियो धर्म भाइयो तुम लोकोंने पूर्व पुण्यके उदयसें आर्यदेस मनुष्यजन्म उत्तमकुल माहाजनवंश श्रावक धर्म पाया है श्रीमहावीरतीर्थंकरके उपदेशानुसार उनोंके चेले गणधरोनें जो द्वाद-शांगी रची उसमें छउं भाषा विज्ञान सर्वतत्व भरा है बोप्रवाहसें चलती २ काल दोष बुद्धिकी हीनतासें ज्ञानका तिरोभाव होणे लगा तब वाराकालीके अंतमें खंद्धिलाचार्यजी तथा दुसरी बार देवर्द्धिगणी क्षम श्रमणनें शत्रुंजयतीर्थके अधिष्ठायक गोमुख कवडयक्षकों आराधकर उसकी मदतसें राजादिक महर्द्धिक श्रावकोंसें ज्ञान द्रव्य एकठा करा-कर देवतानें १२ हज्जार स्वेतांबर यती साधुओंकों सोरठ देसकी वल्लभी नगरी (बला) में एकठे किये उस जगे साधुओंकों जो जो

कठाग्र पाठ सिद्धांत याद था सो ताडपत्रोंपर लिखा जो थलपूरा न मिला छोडदिया एसे क्रोड ग्रंथ लिखे जिनोंका नाम नंदीसूत्र मेंदरज है फेर चौद पूर्वधर श्रुतकेवलीभद्रबाहू स्वामीके बनाये सूत्र निर्युक्तियें लिखी दस पूर्वधर उमास्वातीके बनाये पांचसे ग्रंथ लिखे इसतरे द्वादसांगी वाणीका रहा भया जो अंसभाग याद था सो लिखा तात्पर्य इय हेकी श्वेतांबर मात्र जैन उस ग्रंथोंकों मानना फर्ज है उसमें विवरेवार श्रावकके सम्यक्तकी करणीमें जिनराजकी मूर्तिकों साक्षात् जिनराज तुल्यमानना लिखा है और द्रव्य भावसें पूजा करणी लिखी है वस पांचमा आरा कलियुगके प्रभावसें एक लिखणेके रुजगारीनें द्वेषबुद्धिसें लिखाइ बावत रत्नशेखरसूरि आचार्य तथा अहम्मदाबादके संघसें तकरार कर अपणी प्रतिष्ठा जमाणेकू जिनप्रतिमा निषेधरूप मत कदाग्रह खडा किया विक्रमसंवत् १५३१ में उसका उपदेस माननेवाले लोपक कहलाये लोपक शब्दका अर्थ एक पंडित व्याकरणीनें एसा किया (लोपयति जिनाज्ञां इति लोपकः) इसके गछमें विक्रम संवत् १७०९ में अहम्मदाबादमें बजरंग लोपकका चेला लवजी गुरूकों भ्रष्ट समझ लोपकमतका बाना छोडकर नया भेष बनाया लोपकजती ओघेकी डंडी २४ अंगुलकीरखै, ढूढकलवजीनें वे प्रमाण दोहाथकी डंडी ओघेमें डाली, निसीत सूत्रमें लिखा है जो साधू ओघेकी डंडी वे प्रमाण रक्खे तो प्रायश्चित्त आवे, इस सूत्रकों जलांजली दी, लोपक मुखपर पट्टी नहीं बांधता लवजीनें मूंपर वस्त्रकी पट्टी बांधी डोरा डालकै, आचारांग सूत्र दुसरा श्रुतस्कंध तीसरे उद्देसेमें कासलेते छींकलेते डकार लेते इत्यादिवेगोंकी वखत साधू हाथ मुख सामने देवै, या वस्त्रसामने देवै

इसवास्ते सिद्ध भयाकै मूंपर वस्त्र बांधणेकी आज्ञा नहीं, हाथमें वस्त्र रखकर बोलते समय यतना करै, इस सूत्रकी मर्यादा लोपी, लोपकजत्ती गोचरीलाते वखत हाथकी कलाई पर झोली धरकै वस्त्रसें ढककरलाता लवजीनें मुसलमांन फकीरों की तरे हाथमें लटकती झोली भिक्षा लाणे लगा, एक घरका आहार दुसरे घर दिखाणे लगा, ओघ निर्युक्ती सूत्र के विरुद्ध वरताव करणे लगा, लोपकजती दसहाथकी चद्दर ५ हाथकी धांगरणी ५ हाथका चोल पट्टा रखता, लवजीने भीलोंकी तरे गांठे लगा २ कर पांचहाथके टुकडे या कम वेसी वांधणा सरूकरा, ओघनिर्युक्ती सूत्रकी आज्ञा तोडी, चवदे उपगरण सूत्र मुजव नहीं, इसतरे न तो तीर्थंकरगण धरोंका कहावाना (छाप) रखा, न अपणे लोंके गुरूका, इत्यादि अनेक आचरणा सूत्रविरुद्ध धारण कर मतचलाया कोइ वंदन करे तो हाजी भाई, अथवा दयापालो कहणा सरू करा, और व्यवहारसूत्रमें लिखा है साधू धर्म लाभ विगर गृहस्थके घरमें नहीं घुसें इस सूत्रमर्यादाकों लोप किया, क्यों के हाजीपठाणनें वरदानदिया था, मेरा नाम लेते रहणा और बुतपरस्ती नहीं करणा तेरा मत चलेगा इसवास्ते वंदन करै ताकूं हाजी भाई कहणे लगा जब मत वढगया तब कहणेलगा हाजी दयापालो तेरापंथी अभी फकत हाजीभाई इतनांही कहते हैं धर्मकों ढूंढताहूं सो मिला नहीं तब लोक ढूंढक कहणे लगे, सूत्रोंमें एक पात्र पाणीलाणे, एक भिक्षालाणे, एक मात्रक पात्र सो दुसरासंभोगी साधू आजावै तो तीसरे पात्रमें भिक्षा उस साधूकों लादेवै तब वो साधू आया भया अपणे पात्रमें लेके भोजन करै मगर तीसरे पात्रकूं मुनि अपने भोगमें न लेवै अनामतरखै, लवजीनें भिक्षाके पात्रमेंही दस्तपे

सावका काम लेणा सरू करा, जहां साधू चोमासा करै उहां गृहस्थसें मट्टीका तीन पात्र अलग लेवै दस्तकूं १ पेसावकू २ और खंखारकफथू-कणेकू ३ सोलवजीनें सूत्र मर्याद लोपी, इसतरे अनेक विरुद्ध क्रिया सूत्रोंसें सरूकी निसीत सूत्रमें लिखा है आहार करते दस्तपेसावादिकरते जो लोकीकमे साधू धर्मकी हीलना करवावे तो बोधबीजरहित दडका भागी होय, इस लवजीके देखादेख विना गुरू धर्म दास छींपा वगेरे २२ अदम्योंनें नई २ कल्पना और मनोक्त क्रिया सरू की, बगचूलिया सूत्रमें लिखा है २२ गोठीला जिनप्रतिमाकी हीलना निंदा गर्हणा करणेवाले कल्पित उन्मार्ग लोकोंकों परूपेंगे सो बाइसगोठीलाशब्दकों विगाड लोक बाईसटोला कहणे लगे जेसें सुणा हो प्रतिष्ठाशब्दकों बहोत लोक पिष्टाकहते हैं, माहावीर स्वामीके निज संतानी ८४ गच्छ जो है सो आपसमें वंदना आहार पाणी एक मंडलमें बैठ करते है लोंका गछके २ नागोरी दोय २ गुजराती तथा उत्तरावी जिनप्रतिमाका वदन पूजन भावसें करणे लगे इसवास्ते ८४ गच्छके साथ आहार वंदनके सगसामिल धर्म भाईमाने जाते हैं लोंका पूर्वोक्त पांचोंमें नामी विद्वान पीछेसें जती होगये उनोंनें झूटा कदाग्रह आत्मार्थीपणेसें बहुतोंनें छोडदिया, जैनहितेच्छु पत्रसंपादक मताभिमानी ढूंढकमतकों सनातन धर्मलिखता है कुछभी परभवका डर लिखते नहीं रखा सनातन जैनधर्म उसका नाम है जो की ऋषभ देव भगवंतसे यती साधूंका है तुम खुद अकबाल हो १५३१ में लोपक, स १७०९ बाईस गोठीले, १८१८ भीषमपथी, सनातन जब माना जावे जोकी अविछिन्न परंपरा तीर्थंकरोंसें मिले लोपकके गुरूका

नाम क्या है और कोनसा धर्म वो मांनता था इत्यादि सबूत तुमारे पास कुछ नहीं सो तुमारे लिखणेसें ढूंढक धर्मकों सनातन, को न बुद्धिमान मान सकता है गौतमगणधरके विद्यमांन वखतकी गौतम वगेरे इग्यारे गणधरोंकी मूर्ति गुणशिल पुर और राजगृही आदि पहाडों पर मोजूद है उसमूर्त्तिकें मूंपर कपडाबंधा नहीं है हाथमें मुखवस्त्रिका दीखती है मूर्तियांहजारों लाखों वर्षकी प्रत्यक्षमें मोजूद है हजारों वर्षके बनाये भये मंदिर मोजूद है तो बुद्धिवान आपही जाण सकता है के सनातन धर्म जिनमूर्ति माननेवालोंका है, जरा पक्षपात छोडके विचार करणा चाहियै जो जिनेश्वर देवके भक्त थे उनोंने जिनमंदिर बणवाया है या और किसीनें इस हिसाब एसा प्रश्न करणेवाला जैनधर्मका अजाण मूर्ख ठहराया नहीं के २४ तीर्थंकरोके घणे श्रावक भये सो किसनें मंदिर करवाया मुख बांधणेवालोंकी सबूती अन्यदर्शनी वैदधर्मी गेरूरंगित भेषवाला सोमल सन्यासी तो देता है उसने काष्ठकी पट्टीसें मुख वांधा था ये लेख भगवती तथा निरयावली सूत्रमे है स्यात् इसकी परंपरा २२ गोठीलोनें चलाइ होय जैनके किसी भी साधूने मुंपर वस्त्र नहीं बांधा है लेकिन सोमल सन्यासीनें मूर्ति वावत कोई भी दलील नहीं की है लेकिन ढूंढकोंनें दलीलकी इसवास्ते आत्मारामजी संवेगी महाव्रती साधू ढूंढक मत विनापरंपरा गुरू विनाका देख समुर्च्छमपंथ लिखा है जेसें लवजीनें वजरंग लोपक अपणे गुरूकों भ्रष्ट कह कै ढूंढक मत खडा किया तेसें इसरु गनाथढूंढकका चेला भीषमनें रुघनाथकों भ्रष्टाचारी कुगुरु बाईसटोला जिनाज्ञाविराधक कह कर प्रथम तेरे वातमें मन कल्पना

लगाई सो तेरे वात भीषमपंथीयोंके समाधान रूप तीसरा भागमें लिखेंगे, तेरे आदमी एकठ होकर पथ चलाया तेरा पथी इनोंको लोक कहणे लगे, ढूढकका मूंका पट्ट चौडा, तेरे पंथियोंका लंवा ये उडदी वदलाई, वाकी तो जेसे भूतनाथ, वेसाई प्रेतनाथ, इन भीषम भार मलको भृष्ट समझ चंद्रभाण अलग भया रायचदकों भ्रष्ट समझ फतेचद अलग भया जीतमलकों भ्रष्ट समझ छोटाछोगमल वडा छोगमल वगेरे अलग भये एसे वहुतसें निकले किसीकी दालगल गई किसीकी नहीं लेकिन सवोंनें अपणी २ खिचडी अलग २ ही पकाई इसीतरे वाईसोंमें अजीव पंथी अठकोटी-पचखाणवाले नव कोटीवाले इन वाइसोंकी श्रद्धामें आपसमें वहोत फर्क है एक टोलेवाला दुसरे टोले वालेकों साधू नहीं मानता नहीं वंदना व्यवहार करते इसतरेका फजीता देख किसकों साधू समझाजावै फेर भी न मालम कालांतरमें ये अल्पज्ञ रागी द्वेषी क्या क्या मनकल्पनासें फजीता करते जायगें एक झूठ वोलणेवालेकी ओलाद अनेकानेक झूठ बोले, इसमें ताज-वही क्या इसवास्ते सनातन धर्म जती साधुओंका जिनोंके लिखे सूत्र सिद्धांत और जिनोके प्रति वोधे राजन्यवंसी श्री श्री माल श्री माल ओसवाल पोरवाल वायडे इत्यादिकोंसें सनातन धर्म पचम आरेके अंततक चलेगा अव बुद्धिवानोंनें सोचना चाहियै सो क्या जैनधर्मका सम्यक्तकुं जडोंकी तरकारी है सो किसीनें किसीसेंलिया और किसीनें किसीसें कोई तो माहाजन केता है मेनें समकित पूजक चोरी मलजीका लिया है और कोई कहता है मेनें पूजपकोडी मल-जीका सम्यक्त लिया है सच है दुकानेंभीतोकूंजडोंकीतरे अलग

२ मंडगई है और वो कहा भी करते हैं लेरवायां भायां हमारो समकितलेलो अरे भोले भाइयो सम्यक्तचीज एक और ही रत्नपदार्थ है सो पूरे ज्ञान विगर वोरत्न प्राप्त होणा दुर्लभ है आप दलद्री दूसरें- कों केसें धनवान कर सकताहै वाह्य क्रियाका आडंवर देख गडर प्रवाही परमार्थशून्य वाडेके वछडे वन वैठते हैं सम्यक्त उसका नाम हे जो की राजन्य वंसीपणेमें तुमारे वडेरोंकों मदिरामांस सिकार रात्री भोजनवाईस अभक्ष छोडाकर श्रीचोवीस तीर्थंकरोंकी जिनमूर्त्ति द्वारा द्रव्य भावभक्ती नवतत्वका जाणपणा श्रावग धर्मका आचार और भगवंत वीरके परंपरागत शिष्य शुद्ध उपदेशक यती धर्मपालणे वाले गुरु एसा श्रीरत्नप्रभसूरिः तथा दादा श्रीजिनदत्तसूरिः प्रमुख आचार्योंने तुमारे वडेरोंकों जोश्रद्धा देकर जव क्षत्रीधर्मसें महाजन कुलस्थापन किया वस सम्यक्त रत्न वो था अव तो तुम लोक निन्हवोंकी पट्टीमें चढकर उस रत्नकों मलीनकरतेहो अथवा गिराते हो फकत कायक्ले सादिक तप करणेंसेंही साधू तीर्थं करनें नहीं फरमाया है सूयगडांग सूत्रमें लिखा है नंगा रहै मासक्षमण तपकरे डांस मच्छरा दिठंढ उसका परी सहस है, एसा दर्शनी देवलोकादिकका सुख भोगके अनंत संसारमें रुलै जहांतक वीत रागकी आज्ञा नहीं आराधै उहांतक कभी मुक्ति नहीं जावै तो विचारलो इस क्रियासें क्या होणा है जहांतक सच सूत्रोकों नहीं मानते अपने मन कल्पित मतसें मिलती वातें कोई तो आचार्योंके बनाये ग्रंथोंकी कोई २ मान लेते और जो कोई वात ढूंढक- मतकों धक्का लगाणेवाली होय तो अपणे माने ३२ सूत्रकी भी नहीं मानते अंर्थोंका अनर्थ करणा व्याकरणकोशविरुद्ध उत्सूत्र वोलके मृषा वाद-

में दुर्लभ बोधीपणा उपार्जन करते हो जिनप्रतिमासें द्वेषबुद्धिपणा करते हो सो साक्षात् जिनराजसें ही तुमारी बुद्धी द्वेषकी सिद्ध होती है जिनभक्ती गृहस्थकों नहीं करणे देणा इस अभिप्रायसें अनेक कुयुक्तियें लगाते हो देव मूर्तिको रायप्पसेणी जीवाभिगम सूत्रमें गणधर देवजीनें साक्षात् जिनराज फुरमाया है उस मूर्तिकों तुम कहते हो पत्थरकी मूर्ति शिलावटेकी वनाई हमकूं क्या तारेगी एसे २ कठोर वचन कहकर, जिनाज्ञा विराधते हो सच है अभवीकों जिनराज भी नहीं तार सकने हैं कोइ तो गृहस्थीं ढूंढकों की कीया कष्टता देखकर कोई भागवानकी खुसांमदीसें कोई आजीविका वास्ते यानें सेठजी साधोंके जाते हैं में भी जाउगा तो प्रसन्न हो कर साधर्मी जाण गुमास्ता रखलेंगें यारकमकी मदत देकर व्यापार करा देंगें कोई स्त्रीके प्रेमसें कहणेसें कोई वहुत लोकोंकी जमात देखके कोई मंदिरकी भक्तीमें धनका खरच देखकर केइएक अक्कलकी अर्जीर्णतासे द्रव्य पूजामें हिंसा मांनके इत्यादि अनेक कारणनें चिंतामणी स्वरूप सनातन धर्मकों छोड जिनमूर्तिकी द्रव्य भावभक्ती छोड ढूंढकोंके उपासक हो जाते हैं तुमारे ढूंढक साधू जब किसी सनातन धर्मीके घर वहिरणे जाते हैं तब वो गृहस्थ आहार देणे लगता है तब कहते हैं वखाण सुणणेका सोगन लो अथवा अमुक चीजकी सोगन लो तो वहरता हूं इसनरे हठकरके सोगन आगू भी किसी साधूनें दिलाया है या तुमाराही चलाया मया अपणा मन वढागेकू ये जाल खडा किया है आहार देणेकू गृहस्थी जब वखाण सुणणेका सोगन ले लेता है आता जाता है तब सब बाकी गृहस्थ मिलके उसें दबाते है पूजजीरोगम

कितलेलो पूजजी फुरमाते हैं, अरे भाया भगवान मुगत गया उणारी मूरति वनाय फूलफल चढावै त्यांगांनें भोगी कर छकायांरी हिंसा करतां धर्म किम नीपजै, तव सव गृहस्थ क है तहत्तसामी, इसतर उस गृहस्थकूं उलटा फंदेमें डालकै अपणा समकित झलावै, तीर्थंकरोंका सम्यक्त छुडावै, हम तुमें पूछतें है आहार लेते गृहस्थकूं सोगन दिलाणा किस सूत्रमें लिखाहै, सो तुमारे साधू दिलाया करते हैं तव एक जिज्ञासूनें कहा हम तो दयामें धर्म मानते हैं और जैनधर्मका यैही सार है इसवास्ते ढूंढक मतकों सच्च समझ दया धर्म कवूल किया जिनसूर्तिकी द्रव्य पूजामें हिंसा है इसवास्ते हमने छोडी वाकी धर्म तो हम लोकोंनें अगलाई रखा है जवावमें मालम होय असंक्षावर्ष भया इस अव सर्प्पणीमें ऋषभ देवतीर्थ करसें जैनधर्म चला तव ऋषभ प्रभूके उपदेससें भरत चक्रवर्त्तेने अष्टापद पर मंदिर करवाया सत्रुंजयका संघनिकाला वाहूवलजी प्रमुख अनेक मुनि संगथे शत्रुंजय तीर्थपर पहला उद्धार कराया रत्नमई मूर्तिस्थापनकीयेसर्व अधिकार अठारेसें वर्षका लिखा भया सत्रुंजयमाहात्म तथा युगादिदेसना ग्रंथमें है भरतराजाके पाट असंक्षाराजा सूर्य यश वगेरोंने जिनमंदिर जिनमूर्ति भरवाई और चोवीसही तीर्थंकरोंके शिष्य आचार्य उपाध्याय साधुओंनें उस मंदिर मूर्तियोंकी प्रतिष्ठा करी हजारो ग्रंथोंमें ये वात लिखीभई है तो तुम दो सो चार सो वर्षके निकले महाभिमानी अणपढोंकी मूंकी कही कल्पित वात मांनें या त्यागी वेरागी महाव्रती श्रुतकेवली आचार्योंकी लिखी वात सच्च मानें लिखा तो दूर रहा लेकिन् चोदे पूर्व धारी रत्न प्रभसूरिःजोकी पार्श्वनाथके छठे पाटधारीकें-

श्री कुमारजीके पोतेकी हाथकी प्रतिष्ठित महावीर भगवानकी मूर्ति ओसियां नगरमें मोजूद है वैदगोत्र इस वखत वजता है इनोके वडेरे राजा उपलदेव पमार माहाजन भये वाद मदिर वणाया सका होयतो जाके देखलो दस पूर्व धारी श्रुतकेवलीकी प्रतिष्ठित महावीर भगवानकी मूर्ति १५ वर्ष भये जर्नल कर्निक होम साहवकों मिली शिला लेख समेत एसे हम प्रत्यक्ष हजारों तुमें आंखोंसें दिखा सकते हें उन चारित्रधारियोंकों हिंसा प्रतिष्ठा कराते सूझी नहीं सो श्राव-कोंकों उपदेस देकर मंदिर करवाया और प्रतिष्ठा हाथसें करी इस अपेक्षा तुम बुद्धिसें विचारो असक्षावर्पसें जैनधर्मी सम्यक्ती श्रावग मदिर कराते प्रतिमा पूजते चले आये वोतो सव २४ तीर्थंकरोंका कहा भया धर्मकों तुमनें मिथ्यात्व और हिंसा ठहराई और ४०० से वर्ष भये सो सम्यक्त रूप जैनधर्म लोपक ढूढकको मिला अगले जिनमूर्तिकी द्रव्य भाव पूजा करके सव तुमारे वडेरे नरक गये लोपक ढूंढकनें तुमारे वास्ते स्वर्गका विमान हाजर कर दिया और मुक्तिका दरवज्जा खोल दिया बुद्धिमांन श्रावग होगा सोतो इतनेमें ही समझजाता है सो लिखा और एक वका सो मूर्त्ति पूजकोंके पास तो हजारों वर्षका लिखा भया सास्त्र हाजर है, तुमारी फकत मुख-जवानी दलील है, कहो हा कम इनसाफकी डिगरी किसकूं देगा विचारलों सास्त्रमें इनसाफ है जवरन नहीं है इसवास्ते हे मित्र धर्म खाली दया २ में नहीं है धर्म तीर्थंकर केवलीकी आज्ञारूप दयामें हें केवली जिन वातोंकों करणेका हुकम देते हें वो दीखतमें चाहे हिंसाही दीखती होय वो स्वरूप हिंसा कहलाती है भावमें दया है जैसें

साधु पडकमणा करते ऊठेवेठे वायूकायहणीजै, मासकल्पसें विहार करणेकी आज्ञा रस्तेचलते पंचेद्रीतक जीवोंकी हिंसा, नदी उतरणेकी आज्ञा पंचेंद्रीजीवों तककी हिंसा साधवीकूं मकानके दरवज्जा वंधकरणेकी आज्ञा इसतरे वहोत साधुओंके वास्तें हिंसादीखती है लेकिन केवलीका हुकम हे सो भाव दया है इसीतरेही साधु घरपर आवे तो ऊठबैठ वंदना आहार देते जीव हिंसा होती है लेकिन गृहस्थकों लाभका कारण, इसतरे जो फल दानशील तप भावनाका सोही फल जिनमंदिर कराणेका इस पुन्यसें १२ मेंदेवलोक श्रावक जावै ऐसी केवलीकी आज्ञा दीखतमें हिंसा इसतरे बहुत वातोंका हुकम साधु श्रावकोंके लिये शास्त्रोंमें लिखा है व्यवहार दया तो अन्य दर्शनी तथा निन्हवभी पालते हैं उसदयासें फकत पुन्यवंधता है दया नाम ही पुण्यका हेतु है: व्याकरणीसें दया शब्दका अर्थ कराकर सुणोगे तो मालम होगा तीर्थंकरकी आज्ञा है सो अहिंसा है गृहस्थ श्रावग वहोत विवेकी समझा होय तो सवाविश्वा दया पालसकता है असत् आरंभी गृहस्थकों जिनमूर्त्तिकी द्रव्य भावभक्ती संसारसें तारणेवाली तीर्थंकर फुरमाते हैं, ढूंढक पंथ कबूल कर तुमनें जिनमूर्तिकी द्रव्य पूजा छोडकर स्वरूप हिंसाके त्यागी वणबैठै, मगरकेवली भगवाननें श्रावककों सम्यक्तकी करणीमें द्रव्य भाव पूजा करणेकी आज्ञादी उस आज्ञाकों तोडणेसें भाव हिंसक अनंत संसारी जरूर तुम लोक हो वेठै, इतना सुणतेही भडक उठाकी सूत्रोंमें किसी भी जगे श्रावगकूं मंदिर कराणेका तथा द्रव्य युक्त पूजा करणेका अधिकार हेही नहीं तुम हमें भाव हिंसक केसें कहते हो, अगर होयतो क्या हमारे

साधुजी सूत्र नहीं वांचते हैं ३२ सूत्रमें किसी भी जगे मंदिर प्रतिमाका अधिकार हेही नहीं घरवारधानमाल जिनोंनें छोडा सूत्रोमें लिखा होता तो वे क्यों छिपाते, हे मित्र द्रव्य परिग्रह छोडा होय तो ता जब नहीं सो वात तुलछीदासजीने कही है (दोहा) कंचन तजवो सहज है, सहज त्रियाको नेह, परनिंदा परईरषा, तुलछी दुरलभ एह, और छोडासो-धन्य, इसवास्ते हे मित्र इसमतकी जडही अभिमान इर्ष्यासें पैदा भई है सो पीछे लिखादेखले चलाणेवाला चलागया पिछले तो गडर प्रवाही है इतना व्याकरणादि पद्शास्त्रका ज्ञान कहां है सो सच्च झूठका इनसाफकर डाले और वहुतोंनें कर लिया इनसाफ, तव तो सत्यधर्म कबूल करही लिया, सइकडोंनें, इसवास्ते वाजे जव समझ लेते हैं तव भेष चाहे ढूढककाही रखते मगर इस वातकी तकरार नहीं करते एसा हमने कंइयक ढूंढियें सावोंकों देखा है अपणे पक्षके श्रावकोंसे डरते जाहिरामें उपदेस नहीं करते हैं, क्योंके ढूढियोंके श्रावकोंका ये स्वभाव है जो ढूंढिया साधु उत्कृष्टी क्रियावाला भी होय मगर मंदिर तथा जिनप्रतिमाकी निंदा नहीं करै, नहीं उत्थापै तो, उसकी विशेष भक्ती मांनता भी नहीं करै, अगर भोले भाव मंदिरोंकी पुष्टिका शब्द किसी ढूढिये साधुके मूसें निकल जाय तो फेर तो वो गृहस्थ लोक ढीला पासत्था भ्रष्ट उसकों कहणासरू कर दै नहीं वदना नहीं आहार देवै, इसवास्ते वाजै ढूढिये जांणके भी अजाणपणे चलते हैं इसवास्ते हे मित्र तेरा झूठा पक्ष तो इतने परही सिद्ध होता है तूं कहता है मंदिर तथा जिनमूर्ति पूजा तो ३२ सूत्रोंमें नहीं लिखीहै, ३२ सूत्र सचे हैं वाकी सूत्र ग्रथ झूठे हैं ये वात तेनें और तेरे गुरूनें

किस ज्ञानसें जाणी है तब बोला हम मिलती वात मानते हैं सो मिलती वात ३२ सूत्रोंमें हैं बाकी सूत्र आपसमें मिलते नहीं, हे मित्र तेरे लोपकनें जोमत निकाला उससें मिलती बातही तूं मानता है तीर्थंकर गणधरके कहे सूत्रधर्मकूं नहीं मानता तब बोला अजी हमारे मतकी मिलती नहीं ३२ सूत्रोंमें तों आपसमें विरोध नहीं आता बाकी सूत्रोंमें एकसें एककी बात मिलती नहीं इसवास्ते ३२ ही मानते हैं, इस तेरे माने भये ३२ सूत्रोंके जो आपसमें विरोध आता है सो हम आगे लिखेगें मगर तूं वतला इस ३२ सूत्रोंकों किसने लिखे और वाकी सूत्र किसने ताडपत्रपर पहले पहल लिखे, तब बोला लिखातो उनही आचार्योंने है जिसका तुमने पेस्तर नांम लिखा है तो हे मित्र क्या ३२ लिखते उन आचार्योंकों केवल ज्ञानका स्वरूप दरसगया था वाकी लिखते विभंग तब बोला लोंकेजीने ३२ ही कबूल किये इसवास्ते पीछले भी ३२ ही मांनते हैं, हां मित्र ये बात सच्च है लोंके जी की मोहर छापके ३२ है गणधर देवजीकी छाप तो क्रोड ग्रंथ लिखे उन सबोंपर है देखलोंकेजीने ३२ माने उसका पूरा खुलासा खरतर गछाचार्य युग प्रधान अकवर वादसाहकों दयाधर्म धारण कराकरहिंदमें अमार उद्घोषणा फिराणें वालोंने जो विक्रम संवत् १६०५ की सालमें लोंपककी उत्पत्ती लिखी सो हम इहां लिखते हैं लक्का नामका पुरुष अहम्मदाबादमें जैनधर्म वालोंकी पुस्तक लिखणेसें लक्कानाम उसकूं गुजराती भाषामें कहते थे संस्कृत और कुछ नहीं पढाथा तब रत्नशेषरसूरिःतपागच्छाचार्यनें लक्केकों भगवती लिखणे दी लिखतदोससें जंघाचारण विद्याचारण